

एक मुट्ठी धूप

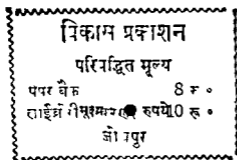
(व्यंग्य कविताए)

बी० आर० प्रजापति

विकास प्रकाशन, जोधपुर

एक मुट्ठी धूप
(व्यंग्य कविताएँ)
Ek Mutthi Dhoop
(Satirical Poems)

© लेखकाधीन
प्रथम संस्करण १९७८



प्रकाशक
विकास प्रकाशन जोधपुर (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान
वी० आर० प्रजापति
तृतीय एच० ४
विश्वविद्यालय कालानी
जोधपुर (राजस्थान)

आवरण प्राटम मंटर, जोधपुर

मुद्रक
जोधपुर विश्वविद्यालय प्रेस
जोधपुर



स्व० श्री तेजमनजी प्रजापति

समर्पण

पूज्य पिताश्री को
जो
जीवन भर
जूझते रहे—अधेरे से
पर
झुके नहीं—
कभी भी

साध्य बला

खिलता है गलाब
बुम्हलाना है
खिलता है गुलाब
सूष जाता है—बेजान
लकिन
उसकी खशबू भर जाती है—
बारागार मे
और
बदी का गुस्ता जगती है ।

—हो ची मिह

अपनी बात

मेरी इन कविताओं पर कविता ही न हान का आरोप लगाय जाने की संभावना है क्योंकि य दो दूक भाया म, अंधेरे की आड म छुपे हुए उन ठगा पर 'एक मुट्टी धूप फैकती हैं जा आधी गताब्दी स हमार दश का ही नहीं, दुनिया भर का गला दबोचने का पडयम रचत रहे हैं ।

वशक । मेरी य कविताए गाव की औरत की तरह फूहड व अकलात्मक हा सकती हैं तीव्र ध्वनि की तरह असुहावनी हा सकती है और सीधी घाटी की तरह सपाट और बडबोली भी हा सकती ह, पर मुझे अपना प्रयास साधक लगगा यदि मेरी य अ-कविताए अंधेरे की गाद म घुटते या खरटे भर रहे अपने बेसबर दोस्ता का, घुटन भरी, गहन कलाओं की करवटें बदलते अपने बेचैन दोस्ता का अपनी ध्वनि-तीव्रता स बचोट कर कम से कम एक मुट्टी यथाथ चेतना दे सकें ।

अंधेरे की आड म साठ करोड लागे पर खूनी आक्रमण का उद्यत मुट्टी भर ठगा पर यदि मेरी एक मुट्टी धूप की एक किरण भी पड सकी तो मैं अपना यत्न साधक समझूंगा ।

तृतीय एच ४
विश्वविद्यालय कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान)
फरवरी १९७८ की
एक नाराज रात

—बी० आर० प्रजापति

क्रम

कविता	१
चक्रमा	४
किसको क्या कहे ?	५
बुभनी आखें	६
सूखार रात	८
दपण	६
साप की लकीर	११
आदमी बनाम भेड	१२
जनता का आदमी	१३
गरीब की जय	१४

किस मुल से बहे	१६
सूत्र	१७
पदे म छेद	१६
आइए जनता को हाथ जोड़ें	२१
मेहनत और घीसू	२३
एक मुट्ठी धूप को आवाज	२५
तुम्ह सौग घ मेरी ।	२७
मरू गा नहीं—हर्गिज ।	२६
चमडी का रग	३१
एक समझाइशी बात	३४
अकाल मृत्यु	३६
इधर दखो तो सही	३७
चेतना	३६
सूना पतझर	४१
डर—उगता हुआ	४२
वह शाम	४७
एक तूफान उठो को	४६
रूपांतर	५३
दद की रात	५४
लानत	५५
निरथक हँसी	५७
बदलत अथ	५६
हर राज	६२
मन करता है	६५
निगान	६७
घोडा	७०
आवाज	७२
मोले लोग	७३
अधरा के गिलाफ	७६
गीत	७७
दो गजलें	७८
गरीब आ	८०

कविता

कविता—

शब्दों का हथियार है
जो आदमी के अन्दर तब
वार करता है
और उसे लहलुहान कर देता है ।

कविता—

छोटे चाकू की तेज धार है
जिससे हम
पुनरानुभूति के
खट्टे-मीठे फलों के कठोर छिलके
छीलते हैं
फल गटक जाते हैं
और सक्ति का आनन्द मनाते हैं ।

कविता—

अनाम फूलों का शुद्ध है

जिसमे से
 फूटती है तरह तरह की
 सुगंध
 अभिभूत करती हुई,
 हम महसूस करत हैं
 और
 आय भीचे हुए भी
 जूही, मधुमालती चमेली
 चना, रातरानी या
 फिर जंगली फूलों की सोंधी महक
 आदि मे विश्वैपित करत ह ।

कविता—

धुन है सगीत की
 जो रन भुन रन-भुन
 नचाती है हृतरंगो को
 और हम—
 रागा म नामित कर
 उस विभक्तित करना चाहते है ।

कविता—

पूर मुख पर लरजती, खिचती
 मुग्ध भाव, दद या कि
 ग्विचाव की एक रेख है
 जिसे हम
 साफ तीर पर पहचान सकते है ।

कविता—

स्वादा म बटी हुई कडुवी, खट्टी
 मीठा या नमकीन चीज है ।

कविता—

तकिया है रेगमी रई का
 जिससे हम अपने आप को

सहलात हैं,
गुग्गुदाते हैं !

कविता—

हो हो करती मजाक भी है !

कविता—

बद कमरे की सजा है,
उमम है छुटन है
जिससे हम
बेचैन हो उठते हैं !

कविता—

बाता स गुथा हुआ
एक हथौडा है
जिससे हम कई चीजें
ठोकर पीटते हैं
तोड़ भी सकते हैं !

वाह !

क्या क्या है कविता ?
वह तो एक सरिता है —
जिसमें

हर बुद्धिजीवी नहाता है
हगता, मूतता भी है
बूडा बहाता है

कला के नाम पर—

मोटरो के बल से
उसमें मचर बनाता है
खुद भी डूबता है
घीरा को भी
डुबोता है ! !

वाह !

क्या क्या है कविता ?

चकमा

हुगडुगी बजा दा
मजमा जमा दा
भाड दो—
जोरदार मापण
वेच दो—
मोड को फिर चकमा दकर
दा टवे की पुडिया
दा गपयो म ।

निगाल लो कोई भी मप्र
फूत्र दो—मोड पर
गले मे जन-नप्र वे
वाघ दो
कोई भी

(सोने चादी, तावे प्रमूनिम का) जन ।

अबुभ
इस मोली सी जनता को ठगने का
मोका यह अबुभ है ।

इसीलिये कहता हूँ—
उठाया हुगडुगी—बजा दा
मजमा जमा दो—फिर
चकमा चला दो—फिर
तमगा लगा लो—फिर
जनता की सेवा का ।

बाता ही बाता म
सब गडबडी मिटा दो
पिस दा चिराग—
भट गरीबी हटा दा ।

किसको क्या कहे ?

किमवा
क्या कह ?

जब गाग गास पर
बठे उल्लू
पात-पात पर रिपट बठे
अनगिन चीटे,
तने जडा वे बण बण पर हैं—
दीमवा वे भु ड
पडे रु ड मु ड
पासडी
सु ड मुसड—
तिलव, टापी घारे ।

अजगर—पू छ पसारे
निगल रहे हैं सव कुछ
बूहा वे
कुनवे के कुनवे
कुतर रह हैं गुप चुप—
कुट-कुट, कुट कुट कुट कुट ।

जब सफेद मछलिया न
बाला कर दिया—सारा कु ड ।
तव—
किसका क्या कह ? •

[मून राजस्थाना]

वृद्धती आँखे

'बह रहा पानी, बह रहा पानी —
उन घघमर प्यागा वा
अगुलि स पानी दिग्वाकर दोडा कर
व सारे ठग
उनकी गठरिया साट उठाकर चलत बन ।

आघ्रा ला खाघ्रा
बैठी ला खाघ्रा
बहुत कहत—उन ठगो न
सब मरभुवा के सामन
पतलें बिछापी, दान सजाए
वे देचार बडे ताकत रहे
ओर पीछे स चुपचाप
उनके कटारे, डोले उठा कर
व सब ठग
एक एक करके रफू चक्कर हा गये ।

मरे दोस्ता ।

य सब गिद्ध जा तुम दख रहे हा
तुम्हारी लाशा के लिये मडरा रह ह ।
खून की जा लकीरे, बू द
तुम्हारे पीछे छूटती जा रही है—
वे तुम्हारी ह ।

तुम समझ ही न सके
और यह पूरा का पूरा दश
एक मिले-जुले पडयत्र क सहार
एक भयानक, अकाल प्रस्त, लिजलिजी
चीज हा गई है
और तुम-हम सब
अत्यंत बचे खुचे, छिड़ल, गदले पानो म
तडपती, दम तोडती—
पचास कराड मछलिया ।

मरे दास्ता ।

मै इत आखा का क्या करू ?
जो मेरी हथेलिया पर
गहर अधर गडा म
पार की तरह तडपती हुई
चमकती तो है
पर कुछ नही दखती ।
लगातार धाखे स शायद य
बुझन लगी ह ।
पर भरे मन म
जाग रहा है
अब भी एक भरासा—
राख के नीच
अगारे की तरह मुलगता हुआ
पचाप । •

[मूल राजस्थानी]

खूखार रात

हवा के हर टुकड़े में
पसरती यह—
सून और मरे हुए आदमी की बदबू,
सारी सुगंधित परतों को तोड़ती
मुझे—
उबकाई आती है ।

पचास कराड चीखे
मेरी हड्डियों तक चुमती हैं—जोरदार
हर खिड़की के सामने
डरावने स्वर में
बोलता है—उल्लू,
चारों घोर मौत का सजाटा
पाच चार सुघरा से डरा हुआ—
सुनसान
यह पूरा शहर ।

इस खूखार रात में
मुझे कतई नींद नहीं आती
मैं मरी आत्मा का
बड़बड़ाना सुनता हूँ
मेरी मुट्टियाँ भी
सरन लगती हैं—
आग ! आग ! आग ! ! !

[मूल राजस्व]

दर्पण

दर्पण—वई तरह के हात है ।

दगन भी वई तरह के हाते हैं ।

दर्पण—का केव कॉवेक्स, स्फीरिकल पराबालिक,

चश्मे के काँच—

इससे भी ज्यादा तरह के,
जिनसे वे दिला सकते हैं आपका
एक गबल—पचास तरह की !
पर गबने
सब में बदली हुई जाती है
दिलावटी सूबसूरत
असल में भीड़ी !

मैं एक सादा दपण रखता हूँ
एक सादा सच्चा काँच !
पचास कराड ठठरियाँ
यदि रोटी के लिये
बदहवाम हों
सर्दों में ठिठुरे
धूल्ले के पास रख
डिब्बे बजाती हों
और उदास हों !
तो क्या
कुछ लाख तादें देखकर
आप मुझे हाँसाग ? हँसाग ?
हाँसा ता हाँसा
हँसा ता हँसा
पर अपने आप का धाखा दम्रोग भाई !
चन्द दिनो में
खुद भी ठठरी हाँसाग
और फिर राँसाग !

ला देखो—
अपनी सादा गबल
में—

एक सादा सच्चा दपण रखता हूँ !
एक सादा सच्चा दशन रखता हूँ ! !

साप की लकीर

अब हुआ यह है कि
तुम, हम सब
बेवस्वत बने हुए
खोज रहे है कि
कहा से शुरू हुई थी यह बीमक ?
अनदीखी, गहरी
कहाँ कहीं से खोखली हागई है
हमारी जमीन ?
जगह जगह से तडकती दीवारें
कलजे म कपकपी उठाता हुआ एक डर ।

तुम हम सब
थक हुए सपना म भ्रमित
चैन की नींद सो रहे थे ।
वह पीणा-साप
पूर घर म घूमता हुआ
हमार गरीर को गुदगुदाता हुआ
हमे सू घ गया ।

हमारे खैररवाह कुछ लोग
अब लकड़ी लेकर
दौड रहे है
और पीट रहे है
साप की लकीर । •

[मूल राजस्थानी]

आदमी बनाम भेड

म एक सवाल फक्ता हूँ मेरे भाई !
रक्खा दिल पर हाथ
और जवाब दो—
आप आदमी ह या कि भेड ?

केवल खुद की घास के लिये मिमियाना
और डड के बल हाके जाना
क्या तुम्हारी नियति नही है ?
यदि है—ता जाओ
आखें मीचे, सिर किये नीचे—जाओ
सहूँ म गिरो
टागे तुडवाओ
मिमियाओ धिधियाओ
खाल उधडवाओ
बोटिया कटवाओ !

यदि नही है तो आओ
बधे से कधा जोडो
पहाड उठाओ
चिनगी स चिनगी जोडो
भाग लगाओ
लाहा साना समी तपाओ
कुछ बनाओ !

मैं एव सवाल फक्ता हूँ मेरे भाई !
रक्खा दिल पर हाथ
और जवाब दो—
आप आदमी है या कि भेड ? •

जनता का आदमी

एक बाम बर मरे भाई ।
हवा में उछाल—
कुछ रंग रंगीले गुब्बारे
गैस से भर हुए,
आकाश में छोड़
कोई जोरदार आतिशबाजी
इक्की टुई मीड में
वाट कुछ रसगुल्ले
और फिर
जोर जोर से रो—
गरीबी के नाम पर ।
मैं ठीक कहता हूँ
चमत्कार के अलावा
रास्ता नहीं है कोई
प्रसिद्धि पान का ।
कोई साधू बाबा हा
या ही नता नुमा
जनता के समक्ष सब
पोस्टर बत प्रगटत हैं ।
तुमका भी हाना हो—अगर
जनता का आदमी
तो जनता को खाओ ।
जनता को पीओ ॥
जनता को ओला ॥ ॥
और—
जनता की भाषा में
कुछ लतीफ छाडा ।

[मूल रचयिता]

गरीब की जय

' गरीब की जय '

' गरीब की जय '

तीस्र रव म

जय जयवार सुनते ही

गराब की आँखें चमकने लगी,
उसने—

अपनी फटी बमीज
खोलकर फैंक दी
पाखर के पानी से
अपना मुँह धोया
अपने ऊबड़ खावड़ वाला म
अगुलियों को कधी की माफिक
फिराने लगा
और राष्ट्रीय धुन सुनने की मुद्रा म
तन कर खड़ा हो गया ।

वे सब

'गरीब की जय' लिम्बे हुए
झडे लिये

'जय जय " बोलते हुए
उसके पास से होकर

निकल गये,

वह कुत की तरह खड़ा रहा

और जब सब

'जय जय करते

निकल गये

ता उसने अपना सिर पीट लिया ।

गरीब की जय का

धीमा पडता सुर

उसे अभी भी

सुनाई द रहा था । •

[मूल राजस्थानी]

आदमी के इतिहास से लगाकर
उसने भूगोल तक के
जन्मदाता निर्माता
हाते हैं कुछ सूत्र ।

गामन चलाने से लेकर
गाड़ी चलान तक के भी
हात हैं—कुछ सूत्र
और सारी कठपुतलियाँ
मनचाही चना के भी
हाते हैं—कुछ सूत्र ।

और ता और
बकरिया चरान से लेकर
आदमी चराने तक की विद्या के भी
होत हैं—कुछ सूत्र ।।
मेरे दोस्त ।
तुम गायद इन सूत्रों की महिमा से
अपरिचित हो ।

उनके या हमार माटा जान
या चैन की नींद मोने की तह म भी
हैं—केवल कुछ सूत्र
और आदमी के सार दु या के
जन्मदाता भी हैं—केवल कुछ सूत्र ।

मेरी इत्तजा है
कि तुम सूत्रों की भाषा समझो मरे दास्त ।
सूत्रों में उलझा मत
सूत्रों का खोलो
सूत्रों की तह तक पहुँचा मेरे दास्त ।।

पदे मे छेद

यह आदमी
बिल्कुल भूला है
और ऐस ही
न जाने कितने
बेहिसाब लोग ।

मौत—
छिपकली की तरह
उन पर नजर गढाये
बैठी है ।

वह आदमी
छत्तीस व्यजन खाकर
अफरा रहा है
डकार लाने के लिये
भूरन पाकता है ।

एक आदमी और है—
जो
भूख लगने पर
वा लेता है
कोपता, बचौड़ी या
कुछ भी ।
क्योकि उसके पास
कुछ चवन्निया हैं,

व्यजन के तिय
 वह—
 रात दिन टापता है
 सपन देगता—
 भागता है भागता है
 भागता है ।

मैं हैरान हूँ
 मर इस दग म
 भूल भ्रजीण
 हकीकत और सपन के बीच
 कोई फक नही करता
 न कोई
 धिमी तरह का
 सवाल पूछता है ।

और कुछ लोग
 पिछन तीस बरसो से
 अभी तक
 पानी पर पद चिह्न
 तलाश रहे हैं ।

वस हर तरह का सवाल
 लाक सभा मे पया हाता है
 तरता भी है
 पर
 पैद म छल हा जाने स
 धीमे धीम
 धीम धीम
 वही पर गक हा जाता है ।

आइए जनता को हाथ जोड़े !

आइए—हम जनता का हाथ जोड़ें !

दूर से ककर माग कर

मटकिया फोड़ें

और प्यासो को

पानी पीने का कहें !

कही—

मटकियाँ खाली ता नही है ?

हो तो—

कुए का पानी ऊपर लान का

ककर पत्थर जोड़ें

आइए—हम जनता को हाथ जोड़ !

आज बात क्या है ?

मुगिया चीचें मार रही

विल्ली का,

बकरिया शेर की

पू छ पकड कर खीच रही है,

भेडिया ममन के सामन

गिडगिडा रहा है

साप मेंढका स

भीख माग रहा है

सारे कबूतर इकट्ठे हाकर

बुत्ता को खा रहे है !

आज कुछ न कुछ गड़बड़ है
 कुछ न कुछ पाना है
 या फिर
 चुनाव का मौसम आने वाला है !
 हम जब हर जगह
 भंडा का खाल मिल जाते हैं
 सारे नरली नाट
 सरपट चल जाते हैं
 चमकीली बाता पर ही
 वाट मिल जाते हैं
 तो फिर
 क्या न हम हँस कर दीजें
 आइए— हम जनता का हाथ जाड़ें !
 हम सूरज के गाले को
 उठा कर फव देंगे
 (या फवने का कहग)
 तुम पतले स धागे से
 हम बाध दना !
 आओ हम चमत्कार वाला
 नाटक खलें
 हाथी से बाध कर
 गरीब चिड़िया का घोसला ठेनें !
 आओ हम
 तूफान स आख मिचानी खेलें
 तरह-तरह के माल बदलें
 और रग रंगीले पापड खेलें !
 जब तक मिल जाती है
 झूठ और पाखंड से—
 गुदगुदी गद्दी का माह क्या छाड़ें ?
 आइए—हम जनता को हाथ जाड़ें !

[मूल राजस्थानी]

मेहनत और घीसू

घीसू बुम्हार
भीर भीर वोती पहन
उघाडे-तन मिट्टी गूघता है,
उमकी औरत 'दुखिया
हसिये स नाटती है प्याज
ढबर स मिरचें ढूढकर
चटना बाटती है
और ठीकर म रखे हुए
वाजरी के वामी दुम्डा का
गिनती है वार'वार ।

उसका लडका घूलिया'
मटका पहुँचान गया है
लछमीच'द सठ क यहा
माखरराम सरपच के यहाँ ।
छाटी लडकी माखूडी
नार पर बठनी मबिष्या उडाती है
और भोली म टाग जुदाता छाद्र
कटोरी भर दूध के लिय
घिल्लाता है तडफडाता है ।

उदास घीसू आज
खुस हाता हुम्ना
बतन पकाने के अलाव पर
जुटाता है उपले, फूस और भूरा
आज अलाव पङ्गा
कल आयगा लछमीच'द
बहीसाता लेकर

व्याज लेा के लिय
श्रीर भ्रगूठा चिपवाकर
वापस चला जायगा ।

भागरराम सरपच
राम राम करता घायगा
अपन ट्रेक्टर का भाडा
यान् दिनायगा
श्रीर इक्की दुक्की विस्त ले जायगा ।

धीसू फिर गाली श्रीर
उदास हा जायगा
बाजरा श्रीर व्याज
फिर उघार ले आयेगा
मठ के यहाँ स ।

हरएक धीसू
भर देग वा गाँव है
श्रीर गहर की गली
लछमीचण भासरराम
मरे देश के 'सक्टर' ।

कित्त बरोड छोडू'
बटारी भर दूध के लिये
चिल्लात तडफडात हैं
पर कही कुछ नहीं हाता,
कुछ नहीं हाता ।

रुल्टे सरपच
आकर कहता है—
कुछ श्रीर मेहनत करो धीसू ।
मेहनत जीवन का सार है धीसू ।।
कुछ श्रीर मटके घडो धीसू ।
मटके तुम्हारा सिगार है धीसू ।।

• [मूल राजस्थान

एक मुट्ठी धूप को आवाज

मैं धुकता हूँ—
उन टोपियो पर
जो बाहर से अलग
और अंदर से बिल्कुल दूसरे रंगों की हैं ।

मैं धुकता हूँ—
उन दीवारों पर
जिन पर चन्द दिनों के बाद ही
एक नया और ज्यादा मूठा पास्टर चिपक जाता है ।

मैं धुकता हूँ
उस पूरे कारखाने पर
जिसका अखबारों में तो बहुत नाम है
पर जिसकी चिमनी से

कभी घुआ तक नहीं निरलता,
 और सारी मशीना के पाम
 लाग उघाडे हाकर,
 थाडा बहुत कीटा चुपडकर
 तरह-तरह क योगासन करत हैं
 और मशीनों एकदम चुप ।

मैं थूकता हूँ—

उन चन्दन बुबुम तिलकघारिया पर
 जा ढोल जैसी ताद लिय हुए
 अपन मुहल्ले स बाहर
 आम सडक पर खडे हाकर
 गरीब आदमी का नाम लेकर
 उसक दद को न देख सकने का नाटक करत हुए
 'राम-राम' करत हैं,
 और कमरा बन्द करन के बाद
 बहोग 'गरीब की घाटिया काटकर
 कच्चा ही खा जात हैं ।

मैं थूकता हूँ—

उन मटा के भुडो पर
 जो चन्द साल
 मलीदा खान पर इतराय है
 और फिर चुपचाप
 सारी भडो की अगुवाई करत हुए
 बूचडखान की फाटक म घुस जाते हैं ।

मैं उस अंधकार पर थूकता हूँ

जिसने सारी आखा पर काला पर्दा पटक दिया है,
 और

आवाज दता हूँ आज—

एक मुट्ठी धूप का

जा जरूर मारे छस उघाडेगी—एक दिन ।

तुम्हे सौगन्ध मेरी ।

अगर कुछ दिन
कटका की राह मिल जाय
दुखा की चोट
चारो ओर से पडने लगे,
सारे रेशमी अहसास
जलकर राख हो जायें
तब भी ओ प्रिय ।
तुम धँस न खोना
तुम्ह सौगन्ध मेरी
क्याकि—
कटककीण जीवन ही
ज्याति पथ को सुझाता है ।

अगर कातिल अंधरा
घेर ले चारा दिशा स,
अगर बिजली

टूट पडन की बढवती हा,
 अगर आधी चीगती हो
 या जान का
 तब भी आ प्रिय !
 न सतुलन खोना
 तुम्ह सौगंध मरी
 क्याकि वाई भी अंधेरी रात
 सूरज का न गिट पाई !
 अगर कुछ दिन
 बंद हा जाय
 भीर की गुजार
 आ अंधेरा डराय
 कम्पित स्वरा म,
 अगर कुछ दिन
 खिलन बंद हो जायें
 गुलाबी पुष्प
 और बसमसान लगे
 रक्त रजित दद
 अगर कुछ दिन
 मरुर गीता की ध्वनिया
 रुद्ध हो जायें
 और गूज
 मृत्यु का ही नुद्ध स्वर !
 तब भी आ प्रिये !
 तुम भयाकुल हा
 पीत मत होना
 तुम्ह सौगंध मरी
 क्याकि हर बलिदान म
 शत गत नय जीवन खिल है !
 तुम्ह सौगंध मरी
 आ प्रिय ! •

मरूँगा नहीं—हर्गिज !

तुम

करलो करोडा टी एन टी विस्फोट

मैं—मरूँगा नहीं हर्गिज !

धुँआ खत्म होने पर

फिर आऊँगा नज़र

'यहाँ हूँ—यहाँ हूँ करता !

मेनिया तुम्हें हुआ है

लाग्व बार धोआ हाथ

खून व लोथड तुम्हारे अत स्तल मे जमे हैं ।

हर युद्ध के बाद

मैं चीखता हूँ कि मैं मरा नहीं

तुम फिर डर जात हो

और अपन सीगो को फिर खुजलान लगते हो,

घाग से
 फिर लबलबा आती है तुम्हारी आँगों !
 यामे हुए—सजर बम टक
 मर-सप गये
 चगेज, हिटलर, कई
 पर
 मैं कहां मरा ?
 हानोई हो या मीजम्बिक
 नाचेगा कब तक रीछ ?
 तुम
 लाख विस्फोटित करो सूय
 माइ ली का
 सूखेगा नहीं खून
 और
 बार बार अंकुरित होऊँगा मैं ।
 आँखें किसी आड ए की
 नहीं देग सक्की मुझे
 मैं अदृश्य हवा में उड़ता रहूँगा—
 हर-दम
 और हर युद्ध के बाद
 चीखूँगा—
 कि मैं मरा नहीं
 धुआँ खत्म होने पर
 फिर आऊँगा नजर
 भूत की तरह
 यहाँ हूँ—यहाँ हूँ करता ।
 तुम
 करलो करोडा टी एन टी विस्फोट
 अनगिनत हत्याएँ
 मैं मरूँगा नहीं हगिज ।

चमडी का रग

एक पीढी पैदा हो गई
एक हा गई जवान
हाथ म लिय—
पत्थर छुरा या अग्नि बान ।



क्या याद नहीं है ?
वे जा जुलूम के जुलूम
गालिया खात थे—व क्या थे ?

बल ही ता
हमने कुछ को बांटे हैं ताम्र पत्र
रग जमाने के लिये ।

फिर फुमफुसाए महामत्री
वह जो नग घडग, कट्टी पीडी थी—जगल की
उसने भी
नहा लिया है—सुगंधित साबुन से
इन फुलैल की गंध उस भी—
छुभा गई है
बम्बनी आइसक्रीम
पीलिये कोल्डक उसने भी,
'कवरे' की खबर—
उसे भी हा गई है
गुग्गुदा गई है दखकर गुग्गुदे गद्दे का ।
बच्ची मडक जो
हमने बनवाई थी
भागी आरही है वह पीली भीड़ बनी—
उसका रौंदती
कितनी गतरनाक !

हा जाओ होशियार
टोपी कपडा बदलने से
हागा कुछ नहीं
उधड़ेगा धाखा—बत्तीस बरस का
बदला फटाफट—
रग चमडी का—
भागो भागा ।। •

एक समझाड़शी बात

तू कवि है
थोडा धीरज घर
इतना मत छटपटा मर भाई !
यह जा दद है
वह चारो आर स वेंधा हुआ है
और तभी जायगा—ज पनेगा,
मव पहाड टूट कर हा जायेंगे समतल !
भयानक प्लास्टिक चन रह हैं
और बुलडाजर भारी मररम
गड गड की आवाज करत—
घूम रहे हैं
थोडा धीरज घर मेर भाई !

अमी ता सूरज
वागो न बीहड जगला मे
मीमवाय पूहड दरख्तो की गाखाओ के बीच—
अटका हुआ है

और हड्डी
डर कर इधर से उधर भाग रहे हैं
कि यह कस हो गया ?
हा सकता है कि
नूता जगली अजगर
पदिचम या पूग्व की दिगा से
स र क ता हुआ आण—चुपचाप
और

सूरज को पूरा का पूरा निगल जाये
 तथा हब्दी
 फिर अर्धी गुफा मे घुस जायें ।
 पर तुमन ता
 दिन का चौधियाता उजाला भी देखा है
 और सूना, सूसाट घोषड अंधियारा भी ।
 फिर

हर जुलूस मे शामिल हाकर
 मुर्दावाद के नार क्या लगाते हो ?
 जिनके लिये तुम
 अजब अजब आवाज मे टरटराते हो
 व ओ भेडें नही हैं
 जो मिर नीचा किये
 मीथी बूचड-खान चली जायेंगी ।
 देखो ।

जगह जगह फव्वारे लगाकर
 हरियाली उगाई जा रही है
 टक्किया का पानी
 खतम हो जायगा तब देखा जायगा ।
 पर तब
 भडे भी भय बदल कर—

भडिया हो जायेंगी
 और उनपर काव् पाना हो जायगा मुश्किल ।
 मेरी बात मान
 और थोडा धीरज घर ।
 तेरा दद सीमाओ मे बधा हुआ है—तू कवि है ।
 यह जो जोरदार पास्टर चिपका हुआ है
 उसपर
 दिन-अ दिन दूसर और जोरदार पास्टर—
 चिपक जायेंग
 तू—घाडा धीरज घर मेरे माई । •

अकाल मृत्यु

मा के आस पास
मण्डराती
भूख पीडित
बालक की आखा जसे
अनगिनत मन
अवकार म टकराते
उडत हैं
चाद की किरना का
महारा पाने
जा न जाने
किस त्रिशा मे डगया ?
और
दिगा जान न होने पर
सडक पर दौडत
बच्चे की तरह
दुघटनाप्रस्त हीकर
कुचल जात हैं । •

इधर देखो तो सही

इधर दगा तो सही भ ई ।

चीखते हैं—

अनगिनत बच्चे

दूध का, राटी का ।

इधर दखो तो सही—

ललचाते हैं

अनगिनत बच्चे

कुल्फी का खिलौना को

रगीन कुत्ते को फाँक को ।

बचर स चीजें फुड़कीनत—बच्चा को
 भूटे वरतन माजत, धात—बच्चा का
 पालन वरत पस मागत—बच्चा का
 स्कूल क मामन मायूग हात—बच्चा का
 बकरिया चरात, गाबर चीनत—बच्चा का
 रिरियात, मन का मसासत—बच्चा को
 आया म आगू उलीचत—बच्चा को ।

इधर देना ता सही माई—

धूप की आग म उघाटे तपत—बच्चा का
 ठिठुरन स मिकुडत, थर थर बापत—बच्चा का ।

देखो ता सही—बीमार कुम्हलात—बच्चा का
 दखा तो सही—भूम स मा मा चिल्लात—बच्चा को ।

और उधर देना ता सही—

कार की बारी स भावत
 या मकखन राटी चाटते—कुत्ता के बच्चा का ।
 मसमली कालीन पर मात
 या दूध दही मटकात—बिल्ली के बच्चा को ।

बच्च बच्चे का

अपना बच्चा बरक दखा ता सही
 पूरा क्षितिज तुम्हार सामने है
 आखे खोल कर दखा ता सही ।

और अब इधर दखा ता मही—

कारा पर—कीचड उछालत बच्चो को
 मृट्टी म पत्थर भेनत—बच्चा को
 आखो म लाल आग मुलगात—बच्चा का
 दात भीचते, मुट्टिया तानत—बच्चा को ।

जरा इधर दखा ता सही मर माई ।।

चेतना

मेरे चौरफ
चिघाडती है—एक आवाज
ओर जलती है
घघकती हुई

नाशाम बम की सी—एक आग ।

तुम

मत आना पास

कीच भरे झूड झॉमल हा तुम ।

धर्रा कर फटेंगे कान

उड जायेगी

राख परतो की चिदिमा

मिट जायेगे निशान तक,

मैं

विनाशकारी—छूटा हुआ

अणु आयुध हू

और तुम

आदिम युग के आदमखोर

पत्थर का हथियार थाम ।

म बूद बूद से जुडा हू

पर हूँ

तूफानी समुद्र

तुम

निर बाज-पथी दुष्ट ।

मत फडफडाना पास

नाहक तुमने राका है पथ

नाहक न रह गालियाँ

प्रलयकारी भूकम्प हू—मैं

नाहक बन रहे दीवार

रनफासमट का दम लिय

पिर रहता हूँ—

मत मरा नम

घा न दभी

दुष्ट घातमयार !

सूना पतझर

सनमनाट करती हवा का
वापता सगीत
थरथराते ढील से
कबरे' बरती हुई सी
वक्ष शाखें,
एक एक कर
क्षीण पत्तों के
वसन को फँकती—
नग्न होती,
चमचमाती धूप किरना स
लिपटती,
साथ साथ
और फिर सनाटा
बस !

ककटसा के चंद जाड़े
हिप्पियो स—
पिनक पूरित
खडे हैं चुपचाप !
लगता है—
इस नग्न दुनिया से दुखी हा
यह शहर सूना
मालिन मुनरो की तरह
वही बहुत सी
नींद गालिया खा लेगा !
या 'हाराकीरी' कर लेगा ! !
वही ता कोपले फूटे
तो कोयल कूक उठे रे ! •

डर—उगता हुआ

उस लिन
उस घुटनमरी
घुप अंधेरी रात में
जब फिर जला
नारे का वह दिया—भरम भरा
गरीबी के नाम का धुँसा छोड़ता—
हा-हल्ला मचाना हुआ
गमाजवाद की धींग छाड़ना
ता मैं हरा—
कहीं अब घाग लग जावगी—ता ?

यो तो हर शाम
 निचुडा हुआ नेल
 बस ही चुक जाता है
 इतना रहता ही बहा है
 कि दिया जले ।
 अंधरे की फाटकों
 अपने आप हो जाती है बंद
 और अपने आप खुलती ह—
 जब कि
 कौमो के भुंड को दीखती है लाश ।

इसीलिय
 उस घुटनभरी
 घुप अंधेरी रात में
 जब फिर जला—वही दिया
 भरम भरा
 ता मैं डरा—
 कही अब आग लग जायेगी ता ?

(२)

एक खूसट ने आकर
 मुझे धीरे से बहा—
 नाई जमाना बडा खराब है
 पहले क्या था,
 अब क्या हा गया है ?
 मैंन पूछा—
 क्या और कसे हुआ है ?
 तो वह—
 चुप और उदास हो गया ।
 तब मैं बोलने लगा—
 सुबह हाते ही हम अपना लहू भुनाकर

राटिया राजत हैं
जोजत रहत है, और गीजत रहत है ।

बे सब मकड़ीनुमा लाग
तहू नो मुना लेत है
पर राटिया छुपा दंत है ।

हम मय
आपन म तहूलुहान होकर
लुढक जात है ।

पहले भी हम यही करत थे
राम और श्याम भजत थे
और भूलभुलैया वाली अधी गलियो म
भटकत थ ।

कमण्य बाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन' का
यह मतलब हगिज नहीं है
कि धान हम बाये
और कोठे काई और भरले
तहू हम भुनायें
और माट कोई धार हा जाय ।
मैं जब यह सब कह रहा था
तो खूसट न
न जान क्या मुह विचकाया
और चल दिमा ।

{ ३ }

इस घोरान रात म
मैं अहनिग
अधर की हथनी पर
किरणा की रंगामा का लेला जाया कर रहा है ।

दूर वही कुत्ते
 झमलिये नहीं रोते
 कि वही कोई मर गया है
 बल्कि इसलिये
 कि कोई मरे और हड्डिया चाटने को मिले ।

कितने करोड़ लोग
 अस्थियो पर कोरा चमड़ा चढाये हुए
 नाहक जीन का ढोंग कर रहे हैं
 गुफामो में टटालत हुए
 वे हाथ

थर थर करती पिंडलिया
 और पसलियो के बीच
 कापती हुई—उचलती हुई
 कलेजे की धमनिया ।

(४)

ज्यो ज्या भीड़ बढ़ती है—
 बाजीगर चीख चीख कर—
 नारा लगात है
 और भोल दशका का
 वज्रतर पकडने का दौडात हैं
 मानो
 वे कोई रगिस्तान के हिरण हो ।

किंतु जवें कटी हुई
 हताश भीड़ जब क्रुद्ध होकर
 लौटती है
 तो वे मय मकडीनुमा लोग
 अपने पजे समेट कर,
 मिट्टी में सिर गडाकर
 भील के पत्थर हो जाते है ।

कसाई पत्थर पर
 छुरी घिसता है—
 और कोठरी में ब्रधा बकरा
 बिलबिलाता है
 घाम के बदले मास का भेद
 वेपदा हो जाता है ।

देखो—

ओढने को सिफ एक फटी चादर
 और पीप की ठिठुरती हुई—यह रात,
 सूरज उगने तक
 इतजार करने की यह कैसी मजबूरी है ?

चारों तरफ

इकट्ठा हो गया है फूम ही फूम
 और जब-तब
 चल जाती हवा ।

अनजान में इकट्ठे हा रहे
 आग भडकन के मारे सामान ।

इसीनिय तो

एक चौघाई गताली
 तीलियाँ घिसने के बाद

उम दिन

उम घुटन भरी

धुप ओपरी रात में

गब फिर जना—जार त

नार का बह लिया—मरम भरा

गरीबी के नाम का धुआ छाडता

हा हस्ता मयागा

ममाजवान की चीग छाडता

ता में बग—

बहा अब घाम सग जायगी ता ।

वह शाम

बेहिसाव आवाजें
घटिया, भोपू और
घरर घरर र र र !

दिल्ली की तज आखो
की तरह
शिकार की खोज में
बुझ बुझ कर जलत—
साइन बोर्ड,
चमकती दुकानें
और चीखते मन
लटपटाती लडकिया
उखडते सपन ।

काल्हू से—
थक मा-दे शरीर
मनमनाते मच्छर सी टीस
बल्ब व चारो और

चक्कर घाटते पतिगो के भुण्ड
मा यह दिमाग ।

कारे और कोठिया
माडिया सूट जूत
रेफ्रिजरेटर, फ्रूट, मुर्गे और
बोतलें
लिनोनियम इनलप पिल्लो ।

घुए का कुहासा
गोरे और चिक्ने
मले और बदपूदार
अधनगे शरीरो की भीड ।

अटपटाती चिल्लपा
वेरतहा —

परेगानिया

सपनो का अम्बार
मिनेमा के परदे
सभी कुछ ।

बितु फिर भी
भारी भरवम मन
बिनमाई ये—
दुपती आँवें—
अनगिनती लोगो
की दुग पीडा का
मबदर हूँती ।

आज
सगना है—
सूरज जल्नी
दूब गया है ।

एक तूफान उठने को

एक तूफान उठने को है ।
मुझे लगता है—
मैं दौड़कर भागया हूँ
रेलगाड़ी के सामने
और कट कर
टुकड़े-टुकड़े हो गया हूँ
गाढा खून
छितरा कर

थक्को मे जम गया है
पटरी के आस पास ।

एक काला माप
फण उठाये
पीछा करता है मेरा,
मैं
लगातार काशिश के बावजूद
भाग सकता नहीं,
मेरे पाव
दल ल म घँसने की तरह
वही वही पडत ह
और
डसन की पीडा से
मैं गिर पडता हूँ
मर कर !

मुझे लगता है
दीमके खा गई है मुझे
और मैं हो गया हूँ
गोखला

नितात अथहीन !

एक ढपोलशख व्यवस्था
वाथे बास से
हाके जा रही है मुझे
और म बन गया हूँ
एक बीमार ढार
पतला गोवर करता हुआ ।
और
भवितव्य म देखता हूँ
भूख

हड्डिया के हूह ।

एक बाघ
भ्रष्टता है मुझपर
खून सने पजो से
मैं

डर कर जमीन में
घोंस जाता हूँ,

बाघ वह
विजली सा दूटता है
मेरी भ्रष्टाचार की तरफ
जिसमें मेरे बच्चे
नींद में सोये हुए ।

अचानक
फिरने लगता है मेरा सिर
एक चीख
जो मेरे खून में ब्रजन लगती है
श्रीर
शिराओं तक में
पैदा कर देती है
एक फडकन ।

मेरी हड्डियों में
सुलग उठती है—एक आग,
सजायाफ्ता
बेकसूर आदमी के आक्रोश की तरह
मेरे अन्दर
फूटने लगती है एक चीज
जो
दिशाओं में फल जाती है ।

एक तूफान उठने को है ।
तेजी से

मर नागून बढवर

हा जात है—

रजरा की तरह

चीर दता हूँ

बाघ का पेट,

दार स बदल कर

हो जाता हूँ मैं

जगनी भसा

घाया म उठनी लाल आग

नयुना म फुफकारती

भ्रमाघ्रनि,

उतावले खुर-मीम ।

दुक्डे दुक्डे जुड कर

खडा हो जाता हूँ मैं

हरकमूलम की तरह

हाथो म उठते

शिला खट

कुचले हुए साप फण

दुघटनाग्रस्त टेन

ध्वस्त हो रहे

एअर कडीसड डिव्ये ।

लो दखा—

क्षितिज पर छा रही

काली पीली लाल धून

मडर ता

चीखता चित्लाता भागता

फडफडाता चला आरहा

चील भुड

एक तूफान उठन का है ।

[मून राजस्थानी]

रूपान्तर

चारो तरफ स
हवा बंद कर दी गई है,
एक पत्ता भी नहीं हिलता,
उमस और
दम घाट्ट घुटन
सारी चीजें
अथ के बटीले तार लगी
दीवारा म बँद !

हजारा प्रदन
पागल कुत्ता की तरह
चिचियाते हुए
उह काटने को दौडते है !

मैं हैरान हूँ—
न कोई बचन का भागता है
न कोई दीवार साधता है
न कोई धारदार हथियार
धामता है !

साठ करोड के
मेरे इस देश म
न जाने कितने आदमी
शापित हाकर
पत्थरा मे रूपान्तरित हो गये ह ।

दर्द की रात

मेरा देश
दद से कसमसाता हुआ
करवटें बदल रहा है
 वेचैन,
व ही कुछ मकिलया
घाबो पर
भिनभिनाती हुई
बैठती है—बार बार
खीझ कर उड़ाने पर
 उड़ जाती है
पर फिर बैठ जानी हैं
कुछ देर बाद ।
कितनी लम्बी अ धेरी
श्रीग दुखदायी है
दद की यह रात ।
कब जमेगा वह रक्त पुत्र—
सूरज ? •

लानत

लानत है—

उन आखो पर

जो लगातार देखती हैं—

पाशविक अत्याचार

गिरे हुए आदमी पर !

तुकमान गेट, राजन, भूमैया,

बेलछी बडहिया प तनगर, जमशेत्पुर,

भुनगो की तरह

कुचल दिये जात हा आदमी

और पूरा देश दखता हा—

तमाशबीन सा खडा

तब

उन आँसु पर लानत है ।

लानत है—

उन बाना पर

जा सुनते रहते हैं

हत्याकाण्ड की हकीकत

तिलस्मी बिस्सा की तरह

गाया कोई स्टैट फिल्म दगी हो ।

उन बाना पर लानत है

जो दग के आवाग वा

गुजाती चीखें सुनकर भी

चौकन तब नहीं होत ।

लानत है—

उन हाथा पर, पैरो पर

मुट्टिया पर

जिनका फालिज मार जाता है

एक अनाम भय की आशका से

जा लगातार

पिटने के आदी हो जाते हैं ।

उस भडुए खून पर लानत है

जो पीढिया स

ठडी नदी की तरह बहता है,

बच्चपात भी

जिसे नहीं दता स्पन्दन तब

ज्वालामुखी की आग भी

जिसे एक उवाल तक

नहीं देती,

ऐस खून पर लानत है

जो हगिज हगिज

गरम नहीं होता है । •

निरर्थक हँसी

भाई साहब !

आप किस बात पर हँस रहे हैं ?

आपके सामने

जो नेता, भाषण कर्ता,

दवाई बेचने वाला या बाजीगर

खड़ा है

या कि कोई कवि या एक्टर

जा भी है !

उनकी भाषा के अर्थ

बिल्कुल उलट पुलट

या दूसरे है !

जैसे कि

'प्यारा' का अर्थ 'भेदुआ'

'भाइयो' का अर्थ 'गधो'

'मिठाई' का अर्थ 'जहर'

'आदमी' का अर्थ 'कुत्ता'

'जनतंत्र' का अर्थ 'जड़-तंत्र'

और 'चुनाव' का अर्थ है

'सिर फोड़ने के लिये

पत्थर चुनाना' !

तब मेरे साहब !

आप किस बात पर हँस रहे ह ?

मरे इस देश म—

भूखा मरन का अर्थ

तपस्या' है

हसन का अर्थ 'पागल होना'

और रोना ?

रोना यहा बिल्कुल मना है !

या तो सिफ

भगरमच्छ रो सकत है

या वो जिनका कि—

प्यार हा गया है !

मसलन कि—

दश स प्यार गरीब स प्यार

सपना की रानी से प्यार

या कि सिफ पैसो से प्यार !

अगर आपका

वाकई प्यार' हो गया है

तो रोने की कोई बन्दिश

यहा नहीं है !

जब सोन' का अर्थ हो 'खोना'

नीद' का अर्थ नाचना हो

'दिन का मतबब हो रात'

और हँसन का अर्थ हा—

पागल होना

तब मर साहब !

मेरी भाषा क

पत्रिभाषित होन स पहले ही

आप

किस बात पर हम रह है ?

बदलते अर्थ

चीजों के अर्थ

आजकल

बहुत तेजी से बदल जाते हैं

और इतना तक कि

बिल्कुल उलट जाते हैं ।

वैसे इतिहास के सिर पर

जूए ढूँढे तो

साफ लगता है

कि पहले भी

ऐसा ही होता था,

पर इतनी तेजी से

पहले नहीं होता था

अर्थों का बदलना ।

कल तक जो पडयंत्री था

वह आज 'मन्त्री' हो सकता है

कल तक जो था

'भारत रत्नम' प्रकट

वह आज हो सकता है

पूरा कूडा करकट

कल तक जो 'आदमी' था

वह आज 'गिरगिट' हो सकता है !

प्यार का अर्थ

अब 'दुलार' या 'स्नेह' नहीं

साफ शब्दों में

'रेप' या 'सहवास'

हो सकता है !

पहले 'मूल्य का अर्थ
 कुछ और था
 और जीवन के मूल्य कुछ न कुछ थे
 अब
 'मूल्य बिल्कुल निर्मूल' हो गये हैं
 और उनकी जगह
 उग आया है
 सिर्फ एक जादू का डण्डा।
 जो जब चाहे—
 कुछ भी पैदा कर सकता है ।

सात समन्दर पार से
 परी बुला सकता है,
 दिव्या सकता है—सपन में
 गड़ा हुआ खजाना

और तो और
 वह आपको
 सैंकिटा में बना सकता है—
 गैडा, अजगर या उल्लू ।

इतनी तेजी से
 पहल चीजा के अर्थ
 नहीं बदलते थे ।

आज मैं 'प्रजापति' हूँ
 बल बगला' हो सकता हूँ
 आज मैं हूँ—
 कोठरी एक गदी की
 बल मैं एक गानदार
 फोटी या बगला हो सकता हूँ
 मेरे दास्त ।
 गायद तुम भी समझते हो

फिर क्या उलभते हो ?
 सारे अथ बदलने की
 शक्ति है 'अथ' में,
 आर्थिक सत्ता आज
 सबशक्तिमान है
 ब्रह्म है नान है
 और
 राज्य सत्ता की बीजगणित से
 उसका मान निकलना है ।

आजकल
 बहुत घना अधेरा है
 और चीजा के अथ
 इस भाड़ी से निकल कर तेजी से—
 उस भाड़ी में छिप जाते हैं ।

भाइ ! तुम अपनी
 नजर की राशनी तीव्र रखो
 अथ के छद्म को भाप लो
 सब तरफ भाव लो,
 आक लो
 अगूर न मिले ता
 चने ही फाक लो ।
 क्योंकि—अगूर का अथ
 अथ लोमड़ी के अगूर
 या 'किशमिन्' नहीं
 चना' ही होता है ।

आजकल
 चीजों के अथ तेजी से
 बदल ही नहीं जाते
 बिल्कुल उलट जाते हैं ।

हर रोज

हर रोज
मजबूरी के नाखून
चेरहमी स
उसकी पीठ म गड जाते हैं
और दिग्वावे की

जगमग सफेद कमीज पर
उमर आते है—

खून के दाग ।

हर रोज

सफेद भय बगुले

जगह पलट कर खडे हा जाते है

आँख मीच कर—

साधु मुद्रा मे ।

भोली मछलिया ठगी जाती है

और

निगले जाने के बाद

हत्या का कोई निशान तक

नही छूटता ।

हर रोज

हवा मे एक अजब सा घुआ

भरकर छुटना रहता है,

सबको

अटपटा लगता है

जी फडफडाता है

कि-तु निकलने का

कोई रास्ता नही सूझता ।

फटफडाते पत्थो को

दबोच कर काबिज हा जाता है

वही हत्यारा वाज—एकार्थी ।

हर रोज

हिरन व गाय के बच्चे

बूचडपाने म लेजाकर

कत्ल किय जाते है

खून से लय-पथ

उनकी चमडी

उतारली जाती है

शानदार बटुए व जूतिया
बनाने के लिये,

और

भेड़िया का बश
पनपता रहता है—वेखीफ ।

हर रोज—शाम
अधकार के आतक से
उदास हो जाती है
पर आग ।

वही न कही

फिर सुलग उठती है
रास्ता सुभान के लिये
जो लगातार
सूरज को इगित करता है ।

हर रोज आदमी
आदमियत के साथ

घोखा घडी करता है

पर अतत

अपन ही हाथो

खुद मारा जाता है ।

तभी तो

एक बीना सा बकन
भाडिया के पास खडा

धुपचाप

मुस्क्राता रहता है—हर रोज

क्या कि

खू सार अवर के

परा के ग्राम पास ही

विरण का एक अकुर

फूटता है—हर रोज । •

मन करता है

जाने क्या क्या
करने को करता है मन ।

इतने गहरे अघकार को
विजली की रेगाग्रो सा बस
चीर-चीर कर
आलोकित हा जाने को
करता है मन ।

घोखे की मारी दीवारों बाध तोडकर
कल-कल करता
छल छल करता
तजी से बह जाने को
करता है मन ।

कितनी तेज, सन्नमण शील
कूडे की दुग्ध हा रही,
इसके बीच—
अगारे सा चमक भभक कर
ज्वलनशील हा जाने का
करता है मन ।

धीमे धीमे जग ग्या रही
गली जा रही
फिर भी मारे अग जकडती—
जजीरा को काट, फरकर
इस कारा से—दूर

दूर दौड़ जान को
करता है मन ।

रोते रात भोज रही
रक्तिम आखा का,
दिशाहीन हो मटक रही
उन इन्ध पाया को,
सच का सहलाता सुख देकर
थपथपाने को
करता है मन ।

जब से ज मे,
साने के पिजर के पाखी
फड़फडाते पख देबस,
नोच नाच पिजर की ग्विडकी
तोड़ फोड़ अर्थीली बदिश
दूर क्षितिज म
सग बयारो के
उड़ उड़ जाने का
करता है मन ।

कितना प्रेशर
तीव्र घुटन है
कितनी आग कितना दद ?
कितनी गहरी
छटपटाहट ??
विखडन की तीव्र प्रक्रिया
चट्टानो को तोड़ फाडकर
विस्फोटित हो जाने का
करता है मन
जान क्या-क्या करने को
करता है मन ? •

निशान

निशान

बहुत अहम् चीज होते हैं ।

परो के निशान

पय भी बताते हैं

और काटो के जगल मे भी

फमाते हैं ।

अंगुलियो के निशान

चार या खूनी की

शिनाख्न कराते हैं

पर दास्तानो की बदौलत

वह घ्रादमी

पूरे दश का खून कर देने के बात भी

रगीन चदमा लगाकर

बेखौफ घूमता है—

क्याकि
निगान न्यायालय के
अहम् सबूत है !

खून के निशान
चाट हत्या
माहवारी या प्रसव जसी
किसी भी चीज का
घोखा पैदा कर सकत हैं !

सापडी का निगान
खतरा भी हो सकता है
घोर तत्र का टाटका भी
निगान स
लाक-तत्र या एक-तत्र म
भद करना बडा मुश्किल है
क्याकि

निगान अकसर
बहुत दागल हात हैं !

मरा बग चलता ता
मैं रगता
पुनाय के निगानो म
गब तरह क दवी नेवना
यीमू का प्रॉग स्वम्तिक

या कि चाँद

य मय निगान
गाय बेन हल या हथीटे
म भी ज्यादा
बारगग गिद्ध हा मकत ये
घोर भी सामान हा जागा तब
बत्रगिय पुनाय—

गगा का हथियाना !

वैसे सत्ता
एक बेनिशान, बेसकल
चीज है

जा एक देग की
जमीन व आकाश के बीच
हर जगह हवा की तरह
तरती, बहती रहती है !

दुःख और दद के निशान,
प्यार या नफरत के निशान
आपन

चेहरे की सलबटा तक से
उपनत दखे हागे

पर

घ य है मरे देश की जमीन
जो

भूख, प्यास, मौत और
दरिदगी के

सभी निशानो पर

बिना बकन लिय

वातू विछा दती है,

आकाश और सडक क—

हर हिस्से पर

दानो और

हर बकन लटक रहत है

पाच म बरस म

गरीबी हटान के बैनर

और साठ पराड आदमी

वारी बारी स

निशाना की धोखा धडी का

शिकार हात रहते है ! •

घोडा

हर बार
चाबुक सवार के हाथ में
होता है

और घोडा—
मार खाता है !

चाबुक खरीदा हुआ हो
या उधार का
चाबुक बेंत का हो

या डोर, या प्लास्टिक का,
घोड़ा मार खाता है
फडफडाता है
और भागता है ।
सवार के हाथ में
लगाम होती है
वह उमके
वेदों से सींचता है
नाक फुलाता है
चाबुक मारता है ।

घाड़े को दाना
इसलिय दिया जाता है
कि वह अन्न भागे
अधिकतम कमाय ।

अश्व शक्ति वाला घोड़ा
इसलिय मार खाता है
कि उमके मुँह में—
लगाम है
और वह ममभना नहीं ।

कभी
घोड़ा समझ जाता है
हिनहिनाता है
भटके से
लगाम छुड़ाता है
मरपट भाग कर
लौटता है
और
खुरो के नीचे
सवार का
पुचल डालता है । •

आवाज

अर ओ मर भाई !
जरा सम्भलो,
हा हाँ
मैं तुम्ह कह रहा हूँ ।

देखा !
सामन
एक छोटे मुँह वाला
भयावह अंधेरे स भरा
एक गड्ढा है ।

और तुम
आसमान की ओर रुख किय हुए
आत्मालाप कर रहे हो
और
पीछे चल रह
तुम्हारे साथी
तुम्हें आवाज दे रहे हैं ! •

भोले लोग ,

[१]

एक कोलाहल

गुराता हुआ

जगल के घन भुरमुटो के बीच
उमरन लगा है ।

लगातार तज हाती

हा हो हा हा ।

कोलाहल का यह

गम्भीर रव

धुमटता हुआ धुआ ।

अलग अलग रंग की

टापिया लगाए हुए

कुछ लूमड

दुम दबाए दुवक्त हुए

लुक्त छिपत बन्हावास

मुट्टिया मे—

थलिया भीच हुए

जगल के चोर रास्तो से

उच्चका की तरह भाग रहे है ।

मैं दूरबीन स

दख रहा हूँ—

उन उच्चका के चेहर

खतरे की आवाज स—

पीले और स्याह पडते हुए ।

[२]

जगल के भोले लोग

पुरान डरें से

लकड़िया बीगत थ
फल-वश मीचते थ
पुण्य पीधे सवारत थ
डहडहाती घात वा

ब्यारिया वा

सून-पसीत स पालत थे ।

चेहरा पर मुस्कानें चिपकाकर

टापियाँ लगाकर

लगातार

लूमडनुमा लाम आत गए

अपन अपन छत्र

भुनात गए

श्रीर

फल फूल धान

टाकरियो म वारो म

भर कर ल जात गए

श्रीर बदले म

भजत गए

भोले लागे के पास

पकेटा म बंद—छल ।

भाल लोग लगातार

अपन को ठगाते गए ।

अति वा अत

विस्फोट म हाता है

आदमी के भालपन की मो

अपनी एक सीमा है ।

लगातार चट्टानें ताडने पर भी

जीवन के इस कुए मे

क्यो नही आता

सुख का पानी ?

रात दिन सेती मे, कारखानो मे—

खून पसीना सींचने

के बाद भी,

रात दिन घोरा मे

धान मरने के बाद भी

क्यो रह जाती है

हमारी आँतें भूखी ?

जगल के बीचोबीच

रहन के बावजूद

जलान या बचाव के लिये

एक लकड़ी भी हमारे हाथ क्यो नही आती ?

ऐसा क्यो लगता है हमे

कि

हमारे कलेज म जैसे

लहू की एक बूद भी नही है ?

ये सब सवाल अब

जगल के

साफ दिल, मोत्रे लागो के

दिल म—

शूल की तरह

चुभने लग हैं

क्यो ? क्यो ?? क्यो ???

करते हुए

अब य नाले लोग

गुस्स स भरने लग है

और

हर अंधरे कोने म

तीलिया और मशालें

जलाने लग है ।

[मूल राजस्थानी]

अंधेरो के खिलाफ

बहुत चाह थी मेरी कपसे, हटा दू अंधर
पर मुझको ही खा रहे—अंधेरा के घेर ।

किस किस को पूछू, किस किस को ममभाऊं
इन दुष्ट अंधेरो की गलिया कितनी तब गिनवाऊं

कसे मैं बतलाऊं—या गये मगरमच्छ
कितनी सोन मछरिया के—अनगिन जे ।

मीरो ने आकर मुझका कानो म बतलाया—
अनगिन कलिया सूख गई अंधियार न इतना तडफाया

वे वाट जोहत रहे—भरने क शीतल जल की
पर प्याल म भर कर काई लावा ले आया ।

बहुत बनाय वे मैंन—सपना के बहुरगी घर
उलझ उ ही म फडफड रहे—पख मेर ।

वहारो ने आकर मुझका—चुपके स कह डाला
कुछ साप हा गये बगिया म सब फूला को डस डाला

उजडी उजडी लगती है—सारी बगिया मुझना
बुझती—बुझती लगती है—सारी अगिया मुझका ।

चिनगी चिनगी शामिल कर मैं आग जलाऊंगा फिर से
पौधे पौधे का रोप रोप कर बाग लगाऊंगा फिर स ।

किरगो की रेखाआ के मैं—बुन दू गा घेरे
जहा जहा हैं इन जहरीले सापो के डरे ।

कुछ भी हो पर चाह रहेगी हटा दू अंधर
देखू कितना गिटते मुझका अंधरा के घरे ।। •

गीत

गलियें मू गी, सडकें बहरी
चौराहे अधापन पाले,
सब अपने घेरा म सिमटे
बात करें ता किससे कैसे ?

सब चहरे हूवे हूवे स
सब आँखें है खाली-खाली
स्वप्न उलभते इक दूज म
माय भी तो सोयें कसे ?

अथ तरते ऊपर-ऊपर
गुब्ब हूए बेअरथ एकदम
रान की तो रस्म बन गई
रोयें भी तो रोयें कैसे ?

बादल बेवम प्यास रोयें
सेत भूख से बदम होयें
कस्तूरी को हिरन भागत
समझायें तो किसको कसे ?

मुस्कानें आसू सजीय
खुशिया अ दर दर उगाये
मले फूट फूट कर रीत
दाँस भी बधवायें कसे ?

सपन मुरदे, सार्धें लगडी
पथ-दशक अधियारा उगले
आपस मे ही अथ उलभते
कोई ममभ भी तो कसे ?
काट—फूल सरीले दिखते
बरफ सरीखा लहू होगया
हर शयन शकल बदलते चेहर
कोई पहचान तो कसे ?

[मूल राजस्थानी]

दो गजले

(१)

सनाटा चोतरफ विसरा पडा है
जरूर कुछ हादसा हुआ होगा

उमस है, घुटन है अजब कपकपी है
 जरूर कुछ न कुछ दवा हुआ होगा
 बादलो का यह देखकर हगामा
 सूरज कही न कही छुपा हुआ होगा,
 अंधेरे के मलवे का इतना बडा ढेर
 उजाला कही न कही खो गया होगा
 दूढते दूढते सुख को हम हार गये
 जरूर उसको कुछ हो गया होगा
 ठोकरें इतनी लगादी हैं सबन मिलकर
 अब तो उनका नशा हवा हा गया हागा ।

(२)

चुपचाप गम मे ला रहे है लोग
 बीमार नूली हो रहे है लोग,
 तरस कर वो उजाले की रात भर
 मुबह थक कर—सो रहे है लोग
 बहुत दौडे पर न पानी मिल सका
 प्यास से पथरा रहे है लोग,
 अपनी कश्रों आप ही खुद छोद कर
 मरन से बनरा रहे है लोग ।
 खोण कर बजर जमी का रात दिन
 सुख के सपने बा रहे हैं लोग
 क्या बला है ? दुख कटता ही नहीं
 खुद कट के टुकडे हो रहे है लोग ।

गरीब आ

गरीब आ गरीब आ ।
 करीब आ करीब आ ।
 किसान आ मजूर आ ।

देख तेर खून से बन रही है काठिया
 देख तरे हाथ से छिन रही है राटिया
 देख तरी मेहनत पे बढ़त पेट सेठ के
 दम कब से लुट रहे है—घान तेर खत के ।
 देख ता दिया जला
 इम अंधेर की बला
 गरीब आ गरीब आ ।

अपनी मुट्टिया स ताड गिर रही दीवार अब
 इस अंधेरे को दिखा रोशनी की धार अब
 आस पास से जुटा थोड़ी मी चिनगारिया
 खाल अपने सब दु खा के कारणो की बारिया ।
 ल उठा जला मशाल
 आग कटकी प डाल,
 गरीब आ गरीब आ ।
 करीब आ करीब आ ।
 किसान आ मजूर आ ।

